2 जनवरी 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 19 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (प्रथम), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

सम्यग्ज्ञान गोष्ठी एवं प्रवचनसार मंडल विधान संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरी (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 18 से 25 दिसम्बर तक सम्यग्ज्ञान गोष्ठी एवं प्रवचनसार विधान अभूतपूर्व सफलता के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तीन दिन ब्र.रवीन्द्रजी 'आत्मन्' द्वारा प्रात: एवं दोपहर में प्रवचनसार पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा भी प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात:कालीन प्रौढ कक्षा ब्र. अमित भैया विदिशा द्वारा ली गई। साथ ही समय-समय पर पण्डित मनोजीजी करेली, पण्डित कमलेशजी मौ, पण्डित पीयूषजी जयपुर,, पण्डित महेन्द्रजी इन्दौर, ब्र. चन्द्रेश भैया शिवपुरी, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित शुभम शास्त्री सिद्धायतन के स्वाध्याय का भी लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर की अध्यक्षता में रत्नत्रय गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें ब्र. नन्हे भैया सागर, पण्डित मनोजजी करेली, पण्डित निर्मलजी सागर, पण्डित गुलाबचंदजी बीना ने अपने विचार प्रस्तुत किये। गोष्ठी का संचालन शुभम शास्त्री सिद्धायतन ने किया।

इस अवसर पर आचार्यय समन्तभद्र संस्थान के छात्रों ने श्री गुरुदत्त नाटिका का मंचन किया, जिसे समागत अतिथियों ने खूब सराहा।

दिनांक 25 दिसम्बर को राज्य प्रशासनिक सेवा में सागर संभाग से चयनित 10 प्रतिभाशाली जैन युवाओं का ट्रस्ट की ओर से सम्मान किया गया।

द्वितीय वार्षिकोत्सव संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ दिगम्बर जैन चैत्यालय रामपुरा में द्वितीय वार्षिकोत्सव रत्नत्रय मंडल विधानपूर्वक अत्यंत धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम के प्रवचनों का लाभ मिला। विधान का अर्थ पण्डित जयकुमारजी ने समझाया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अशोकजी शास्त्री द्वारा संस्थान के बालकों के सहयोग से किये गये।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित शनि शास्त्री एवं सचिन शास्त्री ने किया।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन नया मंदिर ट्रस्ट के अन्तर्गत अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा खनियांधाना द्वारा आयोजित

51वाँ आध्यात्मिक शिक्षण- प्रशिक्षण शिविर

रविवार, 21 मई से बुधवार 7 जून 2017 तक

कार्यक्रम स्थल -

श्री नन्दीश्वर दिगम्बर जिनमंदिर चेतनबाग, खनियांधाना, जिला शिवपुरी (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र - 9977644295, 8109394378, 9098348737

सभी साधर्मीजन शिविर में पधारकर

अवश्य लाभ लें।

ध्यान रहे !

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित पंचतीर्थ जिनालय के पंचकल्याणक का चतुर्थ वार्षिकोत्सव रविवार, दिनांक 26 फरवरी से मंगलवार, दिनांक 28 फरवरी 2017 तक आयोजित हो रहा है।

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

छठवीं कथा में कहा है कि कीचड़ में फंसी हुई हथिनी विद्याधर द्वारा दिये गये महामंत्र के प्रभाव से भवान्तर में राजा जनक की पुत्री सीता हुई।

सातवीं कथा में यह कहा है कि दृढसूर्य चोर शूली पर दुस्सह दु:ख से व्याकुल होकर यद्यपि जल पीने की आशा से णमोकार मंत्र का उच्चारण कर रहा था, तब भी उसके प्रभाव से वह देवपर्याय को प्राप्त हुआ।

अंतिम आठवीं कथा में तो यहाँ तक कह दिया है कि विवेकहीन सुभग ग्वाला उस मंत्र के केवल प्रथम पद के उच्चारण मात्र से तद्भव मोक्षगामी सुदर्शन सेठ हुआ और उसने उसी भव से मुक्ति की प्राप्ति की।

यदि वस्तुत: ऐसा है तो जो प्रतिदिन नियमित रूप से त्रिकाल णमोकार मंत्र का जाप करते हैं, पंचपरमेष्ठी का ध्यान करते हैं, उनके जीवन में अनेक दु:ख या संकट क्यों देखे जाते हैं ? अथवा जो स्वयं पंचपरमेष्ठी में शामिल है, ऐसे पांच पाण्डवों पर ऐसा भयंकर उपसर्ग क्यों हुआ ? उन्हें अंगार सदृश जलते हुए लोहे के कड़े क्यों पहनाये गये और पहना भी दिये तो ठंडे क्यों नहीं हुए ?

एक नहीं ऐसे अनेक पौराणिक उदाहरण दिये जा सकते हैं, जिन्होंने हृदय से पंचपरमेष्ठी की आराधना की, प्रतिदिन णमोकार मंत्र का जाप किया और स्वयं भी पंचपरमेष्ठी के पदों पर विराजमान रहे, फिर भी अनेक प्रतिकूल प्रसंगों का सामना करना पड़ा – ऐसा क्यों हुआ ?

भावलिंगी संत सुकुमाल मुनि को स्यालिनी ने खाया, सुकौशल मुनिराज को शेरनी ने खाया, गजकुमार मुनिराज के सिर पर जलती हुई सिगड़ी रख दी गई, राजा श्रेणिक के द्वारा यशोधर मुनिराज के गले में मरा सांप डालने से मुनिराज को लाखों चींटियों ने काटा, श्रीपाल को कुष्ट रोग ने घेरा, तीर्थंकर पार्श्वनाथ पर कमठ ने उपसर्ग किया और मुनिराज आदिनाथ को छह माह तक प्रतिदिन लगातार आहार की चर्या पर निकलने पर भी आहार नहीं मिला, महासती सीता को दो-दो बार वनवास के दु:ख उठाने पड़े, राम भी चौदह वर्ष तक वन-वन भटकते फिरे, प्रद्युम्न कुमार को अनेक संकटों का सामना करना पड़ा, जीवन्धर और उनके माता-पिताा रानी विजया व सत्यन्धर को मरणतुल्य कष्ट झेलने पड़े, महासती मनोरमा को मजदूरी करनी पड़ी, सुदर्शन सेठ को सूली पर चढना पड़ा, सैंकड़ों मुनियों को घानी में पिलना पड़ा, अकम्पनाचार्य आदि सात सौ मुनियों को बलि आदि मंत्रियों कृत उपसर्ग झेलने पड़े। आखिर ऐसा क्यों हुआ ?

जबकि ये सब पंच नमस्कार मंत्र के आराधक तो थे ही, इनमें अधिकांश तद्भव मोक्षगामी और भावलिंगी संत भी थे और आदिनाथ व पार्श्वनाथ तो साक्षात् तीर्थंकर भगवान की पूर्व भूमिका में स्थित थे, फिर भी उन पर उपसर्ग क्यों हुए ?

इससे स्पष्ट है कि अकेले स्मरण से ही कार्य की सिद्धि नहीं होती। कार्य की सिद्धि तो अनेक कारणों से ही होती है, पर जिस कारण की महिमा बतानी होती है, उसे मुख्य करके शेष कारणों को गौण किया जाता है। वही जिनवाणी में प्रथमानुयोग के कथन की शैली है।

'सब पापों के नाश' का तात्पर्य यह है कि जब तक उसका ध्यान णमोकार मंत्र पर रहेगा, तब तक उसका उपयोग अन्य इन्द्रिय विषयों में या पापभावों में जाएगा ही नहीं। अत: पापभावों की उत्पत्ति ही नहीं होगी। यह सब पापों के नाश का स्वरूप है।

दूसरी बात यह है कि जो व्यक्ति णमोकार मंत्र के माध्यम से पंचपरमेष्ठी का स्वरूप भलीभांति जानकर उनका स्मरण करता है, भक्ति करता है, बहुमान करता है, वह अवश्य ही उनके द्वारा बताये गये मुक्ति के मार्ग पर चलेगा। जब वह स्वयं उनके बताए गये मुक्ति के मार्ग पर चलेगा तो वह एक न एक दिन पंचपरमेष्ठी पद में शामिल भी हो जायेगा।

ऐसी स्थिति में वह पूर्वकृत पापों से बंधे कर्मों की निर्जरा भी करेगा। इस अपेक्षा को ध्यान में रखकर ही णमोकार मंत्र के जाप को सर्व पापों का नाश करने वाला कहा गया है।

यहाँ कोई कह सकता है कि यदि णमोकार मंत्र का लाभ मात्र वर्तमान पापभावों एवं पापों से बचना ही है, तो वर्तमान पापों से एवं पापभावों से तो हम किसी अन्य महापुरुषों के स्मरण से भी बच सकते हैं, इसमें णमोकार मंत्र की ही क्या विशेषता रही ?

इसका समाधान यह है कि रागियों के चिंतन/स्मरण से रागभावों की महिमा ही दृष्टि में रहेगी, वीतरागता की नहीं।

वीतराग की महिमा आये बिना लौकिक कामनाओं का अभाव नहीं होता, अपितु कामनाओं की पूर्ति करने की कामना ही जागृत होती है, जो स्वयं पापभाव है, पाप का कारण है।

अत: उन्होंने कहा - ''देखो एक कार्य के होने में अनेक कारण मिलते हैं, तब कहीं कार्य संपन्न होता है। तथा अपने-अपने दृष्टिकोण से सभी कारण महत्वपूर्ण होते हैं। जिसप्रकार लाखों रुपयों की मशीन में दो रुपये के स्क्रू का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। उसी प्रकार प्रत्येक कार्य में सभी कारणों का अपना-अपना स्थान है; पर कथन में कभी कोई कारण मुख्य होता और कभी कोई अन्य।

उदाहरण के तौर पर हम एक ऐसे बीमार व्यक्ति को लें, जिसे अचानक हार्ट अटैक हुआ है और डॉक्टर के कहे अनुसार यदि समय पर मेडिकल हेल्प न मिलती, चिकित्सा सहायता उपलब्ध न होती, तो वह दो घंटे में ही दम तोड़ने वाला था, परन्तु पड़ौसी ने यथासमय उसे इमरजेन्सी वार्ड में पहुँचाकर और होशियार डॉक्टर को बुलाकर रात में 2 बजे मेडिकल स्टोर्स खुलवाकर जान बचाने वाले के लिए अत्यंत आवश्यक दवा की व्यवस्था कर दी, जिससे वह मरीज बच गया। इसप्रकार उस मरीज की जान बचाने में चार कारण मिले :-

एक - पड़ौसी, दूसरा - डॉक्टर, तीसरा - मेडिकल स्टोर वाला और चौथी - दवा।

अब देखिये इस घटना के प्रत्यक्षदर्शियों में से एक व्यक्ति तो पड़ौसी के गीत गाते हुए कहता है - पड़ौसी हो तो ऐसा हो। यदि वह समय पर व्यवस्था नहीं करता तो बेचारा मर ही जाता।

दूसरा डॉक्टर के गीत गाता हुआ कहता है -''काश ! ऐसा होशियार डॉक्टर समय पर न मिलता तो वह बेचारा अपने जीवन से ही हाथ धो बैठता।''

तीसरा कहता है -''अरे ! यह सब तो ठीक है, परन्तु यदि वह दवाई समय पर उपलब्ध न होती तो बेचारा डॉक्टर भी क्या कर सकता था ? उस बेचारे दुकानदार की कहो, जिसने रात के दो बजे दुकान खोलकर दवा दे दी।''

चौथा कहता है -''इन बातों में क्या धरा है ? आयुकर्म ही सर्वत्र बलवान है। यदि आयु ही समाप्त हो गई होती तो धनवंतरी जैसा वैद्य भी नहीं बचा सकता था। ये सब तो निमित्त की बातें हैं। जब जीवनशक्ति ही समाप्त हो जाती है तो सारे के सारे प्रयत्न धरे रह जाते हैं। मौत के आगे किसी का वश नहीं चलता। यदि पड़ौसी, डॉक्टर, मेडिकल स्टोर वाला और दवायें ही बचातीं तो डॉक्टर आदि ने अपने सगे माँ-बाप एवं प्रिय कुटुम्ब-परिवार को क्यों नहीं बचा लिया ? बचा लेते न वे उन्हें !

पाँचवें ने कहा - ''अरे भाई ! चारों व्यक्तियों ने तो केवल अपने-अपने विकल्पों की ही पूर्ति की है, उन्होंने तो उसके बचाने में कुछ किया ही नहीं, पर आयुकर्म भी अचेतन है, जड़ है, वह भी जीव को जीवनदान देने में समर्थ नहीं है। वह भी उन चार निमित्तों की तरह ही है।

वास्तविक बात यह है कि उस मरीज की उपादान की योग्यता ही ऐसी है, जिसे जहाँ जबतक जिन संयोगों में अपनी स्वयं की योग्यता से रहना होता है, तब तक उन्हीं संयोगों के अनुरूप उसे वहाँ उसी रूप में सब बाह्य कारण कलाप सहज ही मिलते जाते हैं। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य में तो कुछ करता ही नहीं, द्रव्यों का समय-समय होने वाला परिणमन भी स्वतंत्र है। ऐसा ही प्रत्येक वस्तु का स्वभाव है।

आयुकर्म का उदय भी एक निमित्त कारण ही है। निमित्त होते तो अवश्य हैं, पर वे कर्ता नहीं हैं। कार्य के समय उनकी उपस्थिति होती है, अत: कभी किसी को महत्व मिल जाता है और कभी किसी को। वक्ता के द्वारा जब जिसको जैसा मुख्य गौण करना होता है, कर देता है। वास्तविक कारण तो जीव की तत्समय की योग्यता ही है।

कहा भी है -

तादृशी जायते बुद्धिर्व्यवसायश्चतादृशा:।
सहायास्तादृशा: सन्ति यादृशी भवितव्यता।।

अर्थात् जीव का जिस समय जैसा जो होना होता है, तदनुसार ही बुद्धि या विचार उत्पन्न हो जाते हैं। प्रयत्न भी वैसे ही सहज होने लगते हैं, सहयोगियों में वैसा ही सहयोग करने एवं दौड़-धूप करने की भावना बन जाती है और कार्य हो जाता है; अत: कारणों के मिलाने की आकुलता मत करो।

देखो ! कारण मिलाने को मना नहीं किया है, बल्कि उसको मिलाने की आकुलता न करने को कहा है।

जिसे वस्तु के स्वतंत्र परिणमन में श्रद्धा-विश्वास हो जाता है, उसे आकुलता नहीं होती। भूमिकानुसार जैसा राग होता है, वैसी व्यवस्थाओं का विकल्प तो आता है; पर कार्य होने पर

अभिमान न हो तथा कार्य न होने पर आकुलता न हो; तभी कारण-कार्य व्यवस्था का सही ज्ञान है - ऐसा माना जायेगा।

यहाँ कोई कह सकता है कि यदि दवायें और डॉक्टर कुछ नहीं करते तो लाखों डॉक्टर्स, करोड़ों रुपयों के मेडिकल साधन सब बेकार हैं क्या ? और क्या शासन का करोड़ों रुपयों का मेडिकल बजट व्यर्थ ही बर्बाद हो रहा है, पानी में जा रहा है ?

यह किसने कहा कि सब बेकार है ? मैं तो यह कह रहा हूँ कि जब जो कार्य होना होता है, तब उसके अनुरूप सभी कारण कलाप मिलते ही हैं। कहने का अर्थ यह है कि एक कार्य होने में अनेक कारण होते हैं, किन्तु कथन किसी एक कारण की मुख्यता से किया जाता है, अन्य कारण गौण रहते हैं।

मुख्य-गौण करके कथन करने की ये ही तो विभिन्न अपेक्षायें हैं। पहले व्यक्ति ने पड़ौसी को मुख्य किया, दूसरे ने डॉक्टर को, तीसरे ने दवा को और चौथे ने आयुकर्म को मुख्य कर दिया। इसी कथन शैली को तो स्याद्वाद कहते हैं।

अरे भाई ! विज्ञान के जीवन को ही देखो न ? उसकी होनहार भली थी तो उसे एक के बाद एक अनुकूल निमित्त भी मिलते गये और उसके परिणामों में विशुद्धि आती गई, रुचि बढती गई। निमित्त तो पहले भी कम नहीं मिले थे। मैंने ही उन्हें कितना समझाने की कोशिश की थी, पर वे कहाँ समझे थे ? अब वे कभी उस सत्साहित्य को श्रेय देते हैं तो कभी अपने मित्र ज्ञान को धन्यवाद देते हैं, कभी अपने भाग्य को सराहते हैं, तो कभी अपने दादाजी की प्रशंसा करते हैं, जिन्होंने अपने घर में ऐसे सत्साहित्य का संकलन किया था। इसप्रकार कभी किसी को मुख्य करते हैं और कभी किसी को। जब किसी एक को मुख्य करते हैं तो शेष कारण अपने आप गौण हो जाते हैं।

यही बात णमोकार महामंत्र संबंधी पौराणिक कथाओं के संबंध में भी जानना चाहिए। वहाँ स्वर्गादिक की प्राप्ति में परिणामों की विशुद्धि आदि कारण तो अनेक हैं, पर परमेष्ठी की शरण में पहुँचाने के प्रयोजन से णमोकार मंत्र के सुनने-सुनाने को मुख्य किया गया है और शेष कारणों को गौण कर दिया है।

विज्ञान ने जाते-जाते एक प्रश्न और पूछा था। उसका कहना था कि ''पुराणों में तथा मुनिराजों की वाणी में शंका प्रगट करने से महापाप होता है, फिर भी मैं आपके एवं पुराणों के कथनों में शंका प्रगट कर रहा हूँ, इससे मेरा कोई अनर्थ तो नहीं हो जायेगा ?''

उसके इस प्रश्न का उत्तर देते हुए आचार्यश्री ने कहा -''अरे भाई ! अनर्थ तो शंकाओं को मन में रखने से होता है। गुरु के समक्ष शंका प्रगट करने से तो शंकाओं का समाधान होता है।''

आचार्यश्री ने विज्ञान की शंकाओं को स्वाभाविक बताते हुए आगे कहा -''विज्ञान ! तुम नि:संदेह निकट भव्य हो, धर्म के क्षेत्र में परीक्षा प्रधानी होना धर्म के प्रति अश्रद्धा नहीं है। परीक्षा करके जो बात स्वीकार की जाती है, वही श्रद्धा अटूट एवं अचल होती है।

स्वाध्याय में शंकायें उत्पन्न होना तो स्वाध्याय का शुभलक्षण है। शंकाएँ या तो सर्वज्ञ को नहीं होती या उन अल्पज्ञों को जो केवल स्वाध्याय का नियम निभाने में ही धर्म समझ बैठे हैं। जिसे जरा भी जिज्ञासा होती है, उसे तो शंकायें उत्पन्न होती ही हैं।

शंकायें उत्पन्न होना कोई बड़ी समस्या नहीं है; क्योंकि ज्ञान स्वयं सर्व समाधानकारक है और फिर आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। जिस तरह पानी स्वयं अपना रास्ता बना लेता है, खोज लेता है; ठीक उसी तरह जिज्ञासु भी अपनी शंकाओं के अधिकांश समाधान तो स्वयं ही खोज लेते हैं। फिर भी नियमित स्वाध्याय और समय-समय पर सत्संग और तत्त्वचर्चा भी उपयोगी है। जिसप्रकार दही मथने से मक्खन निकलता है, उसी तरह तत्त्व का मंथन करने से सुख-शान्ति और समताभाव प्रगट होता है, धर्म प्रगट होता है; अत: निर्भय व नि:शंक होकर शंका-समाधान करना चाहिए।

सभी जीव जिनवाणी के रहस्य को समझें और सच्चा सुख प्राप्त करें - इस मंगलभावना के साथ आज के वक्तव्य से यहीं विराम लेता हूँ।''

इसप्रकार कहते-कहते मुनिश्री ने अपने वक्तव्य को विराम दिया और सभी जिज्ञासु उन्हें सविनय नमस्कार कर अपने-अपने घर को चले गये। महाराजश्री भी अपने स्वाध्याय में निमग्न हो गये।

छपते-छपते...

हस्तिनापुर (उ.प्र.) में तीर्थधाम चिदायतन का शिलान्यास समारोह दिनांक 11 से 13 फरवरी 2017 तक आयोजित होने जा रहा है। सभी साधर्मीजन सपरिवार कार्यक्रम का लाभ लें। **निवेदक -** श्री शांतिनाथ-अकम्पन-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट हस्तिनापुर। **संपर्क सूत्र -** मुकेशचंद जैन (9837079003), अशोक लुहाड़िया (9897890893)**E-mail : nairkcd@yahoo.com; info@mangalayatan.com; mukeshjain09@gmail.com**

स्वर्ण जयंती के मायने (16)

तत्त्वप्रचार : आवश्यकता एक दूरगामी नीति की

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

आत्मकल्याण एक एकाकी प्रक्रिया है, आत्मकेन्द्रित ! इसमें न तो भीड़ की आवश्यकता है और न ही किसी अन्य के सहयोग की। आत्मकल्याण के लिये वस्तुस्वरूप के सम्यग्ज्ञान व सम्यक् श्रद्धान की आवश्यकता है, इसमें समझ चाहिये, इसमें समझौते के लिये कोई अवकाश नहीं है; क्योंकि हम लोग एक दूसरे के तुष्टीकरण के लिये कोई भी समझौता कर लें पर क्या वस्तु स्वरूप उसे स्वीकार करने के लिये तैयार होगा ? कभी नहीं।

आत्मकल्याण से पृथक् तत्त्वप्रचार एक ऐसा महान कार्य है, जिसमें अनेकों भव्यात्माओं का कल्याण निहित है। यह एक सामाजिक गतिविधि है, कोई व्यक्तिगत कार्य नहीं सामूहिक प्रक्रिया है, जिसमें कार्य करने वाले और लाभान्वित होने वाले अनेक लोग भाग लेते हैं। **यह एक सतत् दूरगामी और दीर्घकालिक प्रक्रिया है, इसलिये इस कार्य को प्रभावशाली ढंग से सफलतापूर्वक करने के लिये एक उदारतापूर्ण और सहिष्णु, दूरगामी रीति-नीति व कार्यप्रणाली का होना अत्यंत आवश्यक है।**

एक बात और यह कार्य मात्र उन लोगों तक सीमित नहीं रहना चाहिये जो कि पहले से ही इस मार्ग पर लगे हुए हैं वरन् **सतत् नए लोग इस मार्ग पर लगते रहें, यही इस अभियान की सफलता है।** स्वयं हम लोग भी कभी न कभी इसी तरह से इस मार्ग पर आये हैं, कोई न कोई हमारी अंगुली पकड़कर हमें इस मार्ग पर लाया है, यदि ऐसा न होता तो आज हम भी यहाँ न होते।

स्वाभाविक ही है कि वे नये लोग जो हमारा लक्ष्य है और जिन्हें इस कल्याणकारी मार्ग पर लगाना हमारा उद्देश्य है, अभी हमारे सिद्धांतों, विचारों और कार्यप्रणाली से अपरिचित व असहमत हैं। जब तक वे स्वयं चलकर हम तक नहीं पहुंचने लगते हैं, हमारे दायरे में नहीं आ जाते हैं, हमें ही अपने दायरे से बाहर निकलकर उन तक पहुंचना होगा। आखिर मरीजों का इलाज करने वाले डॉक्टर को अपना साफसुथरा, स्वस्थ वातावरण वाला घर छोड़कर मरीजों के बीच जाना ही होता है न, उनके संपर्क में आना ही होता है न !

यह कार्य उनका अपना बनकर, उनके प्रति सद्भावना दिखाकर, उनके प्रति करुणाबुद्धि और सहानुभूतिपूर्वक ही किया जा सकता है, घृणा, द्वेष व तिरस्कार करके नहीं।

कभी कोई अपने आत्मार्थ का कार्य छोड़कर, हम पर करुणा करके अपने दायरे से निकलकर बाहर आया था और उसने हमें समझाया था इसलिये हम आज यहाँ हैं। तो क्या आज हमें भी यही सब करने की आवश्यकता नहीं है ? **आखिर वे लोग जो हमारे संभावित लक्ष्य हैं, हमारे बीच के ही, हमारे अपने लोग ही तो हैं ?**

औरों की तो बात क्या करें पर स्वयं पूज्य गुरुदेवश्री जो एक सच्चे आत्मार्थी थे और अपनी अल्पवय में ही आत्मकल्याण के लिये अपना घर-परिवार सबकुछ छोड़कर साधु हो गये थे, तथापि (परिवर्तन के बाद) अपने सिद्धांतों से समझौता किये बगैर, एक श्रावक की भूमिका के अनुरूप जगत की मर्यादाओं का पालन करते हुए तत्त्वप्रचार हेतु तत्पर रहें एवं ऐसी समस्त गतिविधियों और उनके संचालकों को अपना भरपूर आशीर्वाद प्रदान किया।

ऐसे महान, सामूहिक कार्य करने के लिये विशाल दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। इतना ही नहीं दूरदृष्टि, करुणा और उदारता भी ऐसे गुण हैं, जिनके बिना ऐसी दीर्घजीवी योजनायें बनाकर क्रियान्वित करना संभव ही नहीं है।

सामान्यजन और नेता में यही अंतर होता है, **सामान्यजन जहाँ एक ओर मात्र क्षणिक वर्तमान में ही रमा हुआ रहता है एवं तत्कालीन स्थितियों से आन्दोलित और संचालित होता है, नेता की नजर अपने अंतिम लक्ष्य की ओर होती है।** नेता वर्तमान परिस्थितियों से अवगत तो होता ही है उनका सामना भी करता है और उनके बीच अपना मार्ग भी बनाता है पर न तो स्वयं ही लक्ष्यभ्रष्ट होता है और न ही अपने साथियों को होने देता है।

वे लोग जिनमें दूरदृष्टि का अभाव होता है व जिनके पास दूरगामी योजनायें नहीं होती हैं, क्षणिक घटनाओं के आधार पर मात्र तत्कालीन दृष्टिकोण से अपनी तीव्र एवं कठोर प्रतिक्रियायें व्यक्त करने लगते हैं। वे यह नहीं जानते हैं कि कल स्वयं उन्हें ही वही व्यवहार करना पड़ेगा, जिनकी वे आज कटु आलोचना कर रहे हैं। ऐसे भोले और भावुक लोग अनजाने ही महान अभियानों को क्षति पहुंचाते हैं, हालांकि प्रबुद्ध समाज इस बात को भलीभांति समझता है कि **समस्त विपरीत परिस्थितियों का सामना करके अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखते हुए अपने मिशन को निरंतर आगे बढाना एक बात है और बिना सोचे समझे किसी भी बात पर गैर जिम्मेदाराना ढंग से चीखपुकार मचाना और बात है।** इसलिये वह इसप्रकार की चीखपुकार से अप्रभावित बने रहकर हमेशा ही ठोस कार्य करने वालों को अपना ठोस समर्थन प्रदान करता आया है। ठोस कार्य करने वाले लोग भी ऐसी बातों का जवाब वाणी से न देकर अपने कार्यों से देते हैं, उनका निरंतर अतिशय सफलतापूर्वक आगे बढना उनकी रीति-नीति की सफलता और जनसमर्थन का स्पष्ट प्रमाण है।

दीर्घकालीन कार्य करने के लिये आवश्यक है कि हमारी रीति-नीति इसप्रकार की होनी चाहिये, जो कभी भी संभावित किसी भी परिस्थिति का सामना करने में सक्षम हो। वह क्षेत्र-काल की मर्यादा

से बाधित न हो सके। ऐसी नीति जो कुछ दिन भी कायम न रह सके आत्मघातक ही साबित होती है। रीति–नीति और कार्यप्रणाली ऐसी व्यावहारिक होनी चाहिये कि समुदाय का प्रत्येक सदस्य, हमेशा और हर स्थान पर उसका सुगमता से पालन कर सके।

देश और समाज विभिन्न रुचियों, विचारधाराओं, क्षमताओं, योग्यताओं और विभिन्न शारीरिक, मानसिक और आर्थिक स्तरों वाले लोगों का एक विशाल समूह है। यहाँ किसी के द्वारा किसी का तिरस्कार, अपमान या उपेक्षा करना संभव नहीं है। ऐसा करने के प्रयास समाज की शांति भंग कर सकते हैं, जिसमें किसी का हित नहीं है। उचित यही है कि हम समाज की मर्यादाओं का पालन करते हुए, अपने सिद्धांतों पर अडिग रहकर अपने कल्याण के मार्ग पर आगे बढते रहें, इसी में सभी का हित निहित है।

टोडरमल स्मारक आज अपनी स्वर्ण जयन्ती मना रहा है। देश–विदेश में लगातार 50 वर्षों से तत्त्वप्रचार की गतिविधियों का नेतृत्व व दिशा–निर्देश कर रहा है, उसकी इस सफलता का श्रेय उसकी इस दीर्घकालीन रीति–नीति को ही दिया जा सकता है जो कि **छोटे बड़े झंझावातों के बीच उनसे प्रभावित और विचलित हुए बिना अपने सिद्धांतों पर कायम रहकर, समाज की एकता और अखंडता का सम्मान और रक्षा करते हुए शालीनतापूर्वक अपनी बात प्रस्तुत करने में विश्वास करती है। अपनी–अपनी भूमिकानुसार सच्चे आत्मार्थी को अन्य लोगों को भी आत्मकल्याण के इस मार्ग पर लगाने का विकल्प न आये यह संभव ही नहीं है। और तो और प्रत्येक अंतर्मुहूर्त में आत्मस्वरूप में रमणता करने वाले नग्न दिगंबर भावलिंगी संत भी करुणाबुद्धिपूर्वक उपदेशादिक देकर और शास्त्र रचनाकर यह कार्य करते हैं।**

प्रत्येक आत्मार्थी को अपनी–अपनी क्षमता और योग्यतानुसार अपने जीवन में यह कार्य करना ही चाहिये। स्वयं यह कार्य करें, दूसरों को इसकार्य में तन–मन–धन से सहयोग करें और यदि यह भी न हो सके तो कम से कम उनकी अनुमोदना तो करें ही।

जो लोग उक्त कुछ भी न कर सकें तो कम से कम तटस्थ रहकर, विरोध न करके भी इस कार्य में परोक्ष सहयोग कर सकते हैं। जो लोग ऐसे कार्यों के विरोध में अपनी शक्ति और श्रम का अपव्यय करते हैं, उनके दुर्भाग्य की महिमा तो हम क्या कहें ? ●

वृहद् शांति विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जौहरी बाजार स्थित दीवान भदीचंदजी के मंदिर में दिनांक 18 दिसम्बर को श्रीमती सुभद्राजी शाह की स्मृति में वृहद् शांति विधान का आयोजन बहुत धूमधाम से किया गया।

इस अवसर पर 100 से अधिक साधर्मियों ने लाभ लिया। विधि–विधान के समस्त कार्य **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** एवं श्री विजयकुमारजी सौगानी आदि के सहयोग से संपन्न हुये।

कार्यक्रम का आयोजन स्व. सुभद्राजी के सुपुत्र श्री प्रमोदजी शाह परिवार की ओर से किया गया।

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र–2017

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 27 जनवरी 2017	1. बालबोध पाठमाला भाग–1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग–1 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड –प्रथम वर्ष
शनिवार 28 जनवरी 2017	1. बालबोध पाठमाला भाग–2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग–2 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड –द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड –प्रथम वर्ष
रविवार 29 जनवरी 2017	1. बालबोध पाठमाला भाग–3 (मौखिक) 2. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड –द्वितीय वर्ष

नोट – (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

– प्रबंधक, परीक्षा बोर्ड

तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में आयोजित स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष की –

आँखों देखी

पण्डित टोडरमल स्मारक की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर समयसार मंडल विधान का आयोजन सम्मेदशिखर की पवित्र भूमि पर हुआ। यह आयोजन अपने आप में कई मायनों में अद्भुत और अभूतपूर्व था। स्मारक भवन गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी की प्रेरणा से बना, उन्हीं की प्रेरणा से उसमें जैनत्व के शिक्षण हेतु विद्यालय खुला और उन्हीं के द्वारा वर्तमान में पुन: उद्घाटित तत्त्वज्ञान के प्रचार में यह कार्यरत है। एक तो यह तत्त्वज्ञान उन समस्त त्रिकाली तीर्थंकरों की वाणी का सार है, जो सम्मेदशिखर से मोक्ष गये हैं। दूसरा, क्षेत्र की दृष्टि से भरत क्षेत्र में मोक्ष द्वार के समान ही सम्मेदशिखर की स्थिति है और टोडरमल स्मारक का उद्देश्य भी मोक्षमार्ग के आत्मसात और प्रसार करने का है; इसलिये मुझे लगता है कि जयपुर की स्वर्ण जयंती के लिये झारखंड का सम्मेदशिखर का स्थान चुनना कोई असहज नहीं था।

मैं किन्हीं कारणों से कार्यक्रम प्रारम्भ होने के एक दिन बाद पहुँच सका और विधान में सम्मिलित हुआ। समयसार को सरल रीति से समझने और ऊपरी निगाह से सांगोपांग अध्ययन का यह अवसर था, जिसमें मुझे अत्यन्त आनंद आया। इस आयोजन में मैं साधारण स्थापित परम्परा के विरुद्ध 'अविवाहित इन्द्र' बना था। परम्परा के विरुद्ध जाने से इसमें भी चर्चा करने वालों के विविध मत और तर्क थे; पर मेरा मानना था कि ये इन्द्र और मनुष्य सब कुछ एक प्रतीक मात्र हैं, उद्देश्य तो 2-3 घंटे बैठकर शांति से समयसार को समझना, उसकी स्तुति करना है।

यद्यपि विशाल आयोजनों की अपनी सीमायें होती हैं। सभी क्रियाएं और शुद्धता आदि का पालन कर पाना कठिन होता है, इसलिये थोड़ी ढील हो जाना या कमी रह जाना कोई बड़ी बात नहीं होती; लेकिन जब उस कमी को कमी रूप से स्वीकार न करके जनसमूह उसे राजमार्ग मान ले और वैसा ही आचरण करने लगे तो यह आयोजन की असफलता का बिन्दु बन जाता है। हम पंचकल्याणकों में आहारदान की विधि अत्यन्त शुद्धता और शांति से कराने में सफल होते हैं। जयपुर का आदर्श पंचकल्याणक भी इन मायनों में सफल था। तो मुझे लगता है कि दो-चार छोटी व्यवस्थाएं बनाकर ऐसे हम आदर्श-विधान की परिधियों में ला सकते थे।

इस विधान के आयोजन में विधान ही एकमात्र केन्द्रबिन्दु न होना अपने आप में गौरव की बात है। सुबह शाम और दिनभर जो प्रवचन होते थे, उनमें पाण्डाल का भर जाना, यहाँ तक कि विधान के समय की संख्या से ज्यादा प्रवचन में संख्या दिखाई देना अपने आप में सुखद और आनंददायक बात थी। मैंने कुछ लोगों से कहा भी कि रात के सांस्कृतिक कार्यक्रमों से प्रवचनों में उपस्थिति का अनुपात लगभग दोगुना है। यह इस आयोजन की सफलता का प्रमाण है। तो उत्तर में वे एक कदम आगे निकलकर बोले कि अगर इन नाटक और संगीत की जगह शास्त्री विद्वानों द्वारा रोज तत्त्वचर्चाएं और गोष्ठियाँ होती तो हमें और भी मजा आता और हम सुनने बैठते।

इस आयोजन का प्रमुख आकर्षण इसका मंच ही नहीं, दरी भी थी। सुनने वाले वे थे जो अक्सर सुनाने का काम भी करते हैं, जो गंभीर बौद्धिक चर्चाएं करते और सुनते हैं। जैनत्व के नाम पर चल रहे कोरे क्रियाकांड के विरोध में गुरुदेव ने जो सत्य जैनधर्म का उद्घाटन किया था, वह अब फैलकर लोगों की समझ में समहित हो रहा है। ये एक तरह का जैनों का पुनर्जागरण है। यहाँ पर पहली बार ये भावना अनुभूत हुई थी कि आजीवन किये गये गुरुदेव और दादा आदि विद्वानों के प्रयास वास्तव में सफल हो रहे हैं।

आयोजन के प्रयोजन संबंधी मेरे विचार और अनुभूतियाँ मैंने कह ही दी हैं। रही बात आयोजन प्रबंधन की, वे सब बेजोड़ थीं। यहाँ अपने सहपाठियों और अग्रज-अनुजों से मिलने का अवसर मिल सका जो किसी भरत मिलाप से कम सुखद नहीं था। मुझे खुशी है कि मैं इस कार्यक्रम का साक्षी बन सका। तदर्थ समस्त आयोजकों, व्यवस्थापकों और दृष्टाओं को हृदय से धन्यवाद देता हूँ। **– सुधीर कुमार जैन, अमरमऊ**

पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान संपन्न

सोनगढ (गुज.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन दिनांक 24 व 25 दिसम्बर को किया गया।

इस अवसर पर पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट द्वारा समयसार एवं पण्डित चैतन्यजी शास्त्री कोटा द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला, जिसका लाभ कुन्दकुन्द विश्रांति गृह के छात्रों, अध्यापकों एवं अनेक ब्रह्मचारी भाई-बहिनों ने लिया।

संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित अमितजी जैन अरिहंत मड़ावरा के संयोजन में संपन्न हुये। कार्यक्रम का आयोजन श्री निरंजनभाई हेमन्तभाई डेलीवाला परिवार द्वारा किया गया।

विश्व णमोकार दिवस संपन्न

जयपुर (राज.) : दिनांक 18 दिसम्बर को सामूहिक जिनेन्द्र आराधना ग्रुप जयपुर के तत्त्वावधान में विश्व के 200 से अधिक जिनमंदिरों में एकसाथ सामूहिक णमोकार मंत्र की आराधना की गई, जिसका मुख्य कार्यक्रम भट्टारकजी की नसियां, जयपुर में आयोजित हुआ। वहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय सहित जयपुर के समस्त जैन विद्यालयों के 200 से अधिक विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक णमोकार मंत्र का गायन हुआ।

इस अवसर पर प्रसिद्ध गायक श्री गौरव सौगानी आदि 10 प्रसिद्ध कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी।

इस प्रसंग पर णमोकार महामंत्र की महिमा संबंधी मार्मिक बिन्दुओं पर **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि संपूर्ण कार्यक्रम का जिनवाणी चैनल पर लाइव प्रसारण किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम श्री राकेश गोधा, श्री पवन पाण्ड्या, रोटे.सुधीर जैन, श्री संजय पाण्ड्या एवं श्री योगेश टोडरका आदि के सक्रिय सहयोग से संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रवीण वोरा ने किया।

2 जनवरी 2017, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

आजीवन ऋणी रहूंगा

इस दुनिया में जन्म लेकर खुद को किसी के लायक बनाना आम बात नहीं है। वैसे जन्म लेना स्वयं के अधीन नहीं है, इसलिये धरातल पर आगमन ही अपने आप में अचरज है और जीवन का संभलना, संवरना भी। इसी कारण किसी की याद हर पल जिसे आये आजीवन जिसका स्मरण रहे, सोचो वह उसके लिये कितना महानतम या सर्वस्व है।

जिसके कारण हमारा जीवन संभला, स्थिर हुआ... हाँ मैं नितांत स्मरणीय स्मारक की ही बात कर रहा हूँ - पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, बापूनगर, जयपुर की। जीवन में हम, कभी भी स्मारक के ऋण से मुक्त नहीं हो सकते, वैसे...चाहें तब भी। इस स्मारक ने हमारे जीवन की हर भ्रांति मिटा दी। जीवन संघर्ष-विहीन हुआ, मानो सोना ! मेरा सब कुछ स्मारक ही है। वहाँ जो कुछ था/है, शायद ही मेरे जीवन में कभी होगा। वहाँ मेरे जीवन का स्वर्णिम 5 वर्ष का काल मानो 5 महीनों जैसा बीता था। छुट्टियों में सभी छात्र घर जाते, तो मजबूरीवश ठहरे हमें आदरणीय भाईसाहब के कहने पर रामू गरमागरम परांठे खिलाता। वह स्थिति अब न रही, अत: खुशी से अधिक गम ही मानूँगा; क्योंकि बरसाती दिनों में कभी जिस चाव से बड़ी दादी के कहने पर रामू गरमागरम पकोड़े करता तो गर्मियों में आमरस। मुझे वहाँ कभी भी कोई कमी नहीं खली। सभी साधर्मी शास्त्री किसी चीज की कमी खलने दे तो बात और थी।

महाविद्यालय की व्यवस्था हेतु सेवारत मंगलवर्धिनी बस और रोडमास्टर साईकिल भी यादों में बनी रहेगी। परमेश्वरदासजी मिश्र गुरुजी ने हमारी संस्कृत नींव बनाई, जिस पर आज कई मंजिलें/मकान भी हैं। बड़े दादा खासकर छोटे दादा को सुनकर हम आध्यात्मिक और वैचारिक दृष्टि से उन्नत बने। छोटे दादा के चिंतन की गहराईयों में आज मुमुक्षु समाज गोते लगाता आ रहा है। वैसे उनके विषय में कुछ लिखना सूरज को दीपक दिखाने जैसा है। प्रतिदिन सुबह शाम कक्षा और प्रवचनों से हम जैन तत्त्वज्ञान से भलीभांति परिचित हुए, जिसकी वजह से हम निराकुल सुख अनुभव करने की राह पर लगे रहते हैं।

वहाँ की पूजन और जिनेन्द्र-भक्ति ना ही हमने कहीं देखी न समयाभाव के कारण उस तरह कर सके। शाम के खाने के बाद जनता मार्केट, महावीर गार्डन, जवाहर कला केन्द्र या मोती डूंगरी, बिड़ला मंदिर घूम आते। स्मारक के छात्र/शास्त्री हैं; अत: जैन तत्त्वज्ञान का थोड़ा बहुत प्रचार कर सकते हैं, अत: संतुष्ट और सुखी हैं।

सुबह-सुबह नियमसार की गाथाएँ सुन रहा हूँ, ऐसा आभास प्रतिप्रभात होने लगता है। मैं जब कभी प्रवचनों की कैसेट सुनता हूँ, सभी यादें फिर से ताजा होने लगती हैं। मैं सशान्ति-समाधान जीवन यापन कर रहा हूँ; अत: स्मारक का आजीवन ऋणी रहूँगा। **- अशोक बैनाडे शास्त्री**

पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 25 दिसम्बर 2016 को श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ के जन्म एवं तप कल्याणक तथा चन्द्रप्रभ भगवान के जन्म एवं तप कल्याणक के अवसर पर श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन धूमधाम से किया गया।

विधान के माध्यम से **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** द्वारा पार्श्वनाथ भगवान के संपूर्ण जीवन चरित्र की जानकारी सभी साधर्मियों को दी गई। विधान के समस्त कार्य आपके निर्देशन में श्री विजयकुमारजी सौगानी आदि के सहयोग से संपन्न हुये।

कार्यक्रम का आयोजन पण्डित अनुज शास्त्री, श्रीमती प्रभा-अजितजी जैन द्वारा हुआ।

नुक्कड़ नाटिका का मंचन

जयपुर (राज.) : यहाँ जग्गा की बावड़ी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर के प्रांगण में दिनांक 4 दिसम्बर को तथा संघीजी का मंदिर सांगानेर में दिनांक 11 दिसम्बर को णमोकार महामंत्र की महिमा बताने के लिये नुक्कड़ नाटक के रूप में विशेष नाटिका का मंचन किया गया।

यह नाटक युवा विद्वान **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** के मार्गदर्शन में प्रसिद्ध नाट्यकर्मी श्री अजय जैन के निर्देशन में अरिहंत नाट्य संस्था के अनुभवी कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। सैकड़ों साधर्मियों ने इस नाटक के माध्यम से णमोकार मंत्र की महिमा एवं उसका ज्ञान प्राप्त किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com